Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 01, June 2021
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021
UGC CARE listed Journal

ताल सम्बन्धी गुण व रचनात्मकता

DR. ARTII SRIVASTAVA

Lecturer, Music Dept., Ramkhelawan Mahavidyalaya Asandra Barabanki U.P.

शोध सार

ताल को संगीत का प्राण कहा जाता है। बिना ताल के हर गीत अपूर्ण एवं नीरस प्रतीत होता है। ताल युक्त संगीत एवं विभिन्न सौन्दर्यपूर्ण शैलियों द्वारा प्रस्तुतिकरण रचनात्मक एवं रोचकता उत्पन्न कर देता है। ताल द्वारा कलाकार की कला मौलिक तत्वों से सम्बन्धित होकर अत्यधिक समृद्ध हो जाती है। ताल व्यवस्था सांगीतिक काल नियमितता का सूचक होती है। इस नियम द्वारा ही संगीत में रचनात्मक एवं सौन्दर्य की वृद्धि होती है। तालों में विभिन्नता ही गायन, वादन एवं नृत्य में रचनात्मकता व नवीनता का संचार करती है। लय तथा तालों का विभाग संगीत में रस का संचार करने के लिये एक महत्वपूर्ण तत्व है। संगीत में ताल के महत्व को देखकर ही शोधार्थी ने इस शोधपत्र में ताल सम्बन्धी गुण व रचनात्मकता को वर्णित करने का प्रयास किया है।

बीज शब्दः ताल, लय, संगीत, रचनात्मकता।

भूमिका

'ताल' गीत, वाद्य तथा नृत्य को एक सूत्र में बांधता है, उनमें व्यवस्था लाता है। कोई भी रचना तभी मनोहर व विविधतापूर्ण प्रतीत होती है जब उसकी लय नियमित होती है। लय को नियमित ताल द्वारा किया जाता है, अर्थात संगीत का मापक यन्त्र ताल है। ताल को संगीत का प्राण कहा जाता है। बिना ताल के हर गीत अपूर्ण एवं नीरस प्रतीत होता है। सर्वप्रथम मानव में अपने शरीर के अंगों के संचालन द्वारा ही लय का ज्ञान प्राप्त किया होगा जैसे– भूमि पर पैर मारना, हाथ से ताली देकर आदि। अति प्राचीन काल, प्राचीन काल, मध्यकालीन तथा संगीत के तालों में हाथों द्वारा किया (सशब्द–निःशब्द) का प्रयोजन प्रचलित रहा है। यर्जुवेद काल में हाथ से ताल देने वालों का वर्णन मिलता है। सामूहिक गान की प्रथा स्त्रियों द्वारा वीणा व कंठ से करना, ऋतु अनुसार सामों का वर्णन तथा ताल देने वाले का वर्णन इस बात का संकेत करता है कि यर्जुवेद कर्मकान्ड प्रधान अवश्य था परन्तु इस काल में भी संगीत को यथा स्थान मान्यता प्राप्त थी।

तालों में विभिन्नता ही गायन, वादन एवं नृत्य में रचनात्मकता व नवीनता का संचार करती है। लय तथा तालों का विभाग संगीत में रस का संचार करने के लिये एक महत्वपूर्ण तत्व है। ताल युक्त संगीत एवं विभिन्न सौन्दर्यपूर्ण शैलियों द्वारा प्रस्तुतिकरण रचनात्मक एवं रोचकता उत्पन्न कर देता है। ताल द्वारा कलाकार की कला मौलिक तत्वों से सम्बन्धित होकर अत्यधिक समृद्ध हो जाती है। ताल व्यवस्था सांगीतिक काल नियमितता का सूचक होती है। इस नियम द्वारा ही संगीत में रचनात्मक एवं सौन्दर्य की वृद्धि होती है।

ताल

ताल शब्द 'तल' धातु से बना है, जिसका अर्थ है–आधार देना। अतः गीत, वाद्य तथा नृत्य को जो आधार प्रदान करता है वह ताल है। 'ताल' गीत, वाद्य तथा नृत्य को एक सूत्र में बांधता है, उनमें व्यवस्था लाता है।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 01, June 2021
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021
UGC CARE listed Journal

''ताल स्तल प्रतिष्ठायामिति धातोझि स्मृतः।

गीत वाद्यं तथा नृत्यं यतस्ताले प्रतिष्ठितम्।। [1]

अर्थात् विद्वानों के अनुसार तीनों कलाओं में ताल को 'बुनियाद' की संज्ञा दी गई है। कोई भी रचना तभी मनोहर व विविधतापूर्ण होगी तब उसकी लय नियमित होगी। लय को नियमित ताल द्वारा किया जाता है, अर्थात संगीत का मापक यन्त्र ताल है। ताल को संगीत का प्राण कहा जाता है। बिना ताल के हर गीत अपूर्ण एवं नीरस प्रतीत होता है। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में ध्रुपद, धमार, टप्पा, ठुमरी, चतुरंग, ख्याल, तराना, त्रिवट आदि गायन शैलियों में विभिन्न तालों का उपयोग होता है। इन गायन शैलियों में प्रयुक्त ताले अपना स्वरूप रखती है।

ताल सम्बन्धी गुण

मुख प्रधान देहस्य नासिका मुख मध्यके।

ताल हींन तथा गीतं नासाहींन मुंख यथा।। [2]

गीत, वाद्य एवं नृत्य की तुलना मदमस्त हाथी से कर ताल को अकुंश की उपमा दी गयी है।

संगीत की धुरी लय मानी जाती है, और ताल संगीत की लय धारण को स्पष्ट करता जिस प्रकार बंसन्त ऋतु में पक्षी, पेड़—पौधे मनोहार करने लगते हैं उसी प्रकार ताल के माध्यम से संगीतज्ञ संगीत में नित्य नूतन चमत्कार करता रहता है।

ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि मानव ने स्वर ज्ञान पहले लय ज्ञान को जाना होगा और यह लय ज्ञान मनुष्य ने प्राकृतिक चक्र से प्राप्त किया होगा। सर्वप्रथम मानव में अपने शरीर के अंगों के संचालन द्वारा ही लय का ज्ञान प्राप्त किया होगा जैसे— भूमि पर पैर मारना, हाथ से ताली देकर आदि। अति प्राचीन काल, प्राचीन काल, मध्यकालीन तथा संगीत के तालों में हाथों द्वारा किया (सशब्द—निःशब्द) का प्रयोजन प्रचलित रहा है। निसर्ग के आधार पर प्राप्त लय या गति तत्व का प्रयोग मनुष्य ने संगीत को साकार रूप देने के लिये किया होगा। संगीत के इतिहास में अति प्राचीन काल, सिन्धु घाटी सभ्यता जो ईसा पूर्व 3000 से 2000 वर्ष माना गया है के अध्ययन से पता चलता है कि उस समय तक संगीत अति विकसित अवस्था में था।

वैदिक सभ्यता और संस्कृतिक को लेकर ही वैदिक युग का निर्माण हुआ। विषय भेद से वेदों की संख्या 4 है। वेद पद, गद्य और गीति में रचे गये थे। ऋग्वेद पदात्मक, यर्जुवेद अधिकांश गद्य है और सामवेद गीति में है। अथर्ववेद में मारन् उच्चाटन आदि में वर्ण प्राप्त है।

विश्व की सम्पूर्ण संस्कृतियों के बीज वेदों से प्राप्त होते हैं। वैदिक काल में संगीत का प्रचार था। इसका प्रमाण वेदों से मिलता है।

ऋग्वेद अधिकांश पदात्मक है परन्तु उनमें ऋचायें गेय थी। इन रचनाओं के गेय प्रधान होने के कारण ही ताल के लिये छन्दों का प्रयोग रचनाओं के सुचारु रूप से गाने के लिये स्वरों का चयन तथा संगीत हेतु वाद्यों का प्रयोग इस तथ्य पर प्रकाश डालता है कि ऋग्वेद काल में संगीत अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

यर्जुवेद काल में हाथ से ताल देने वालों का वर्णन मिलता है। सामूहिक गान की प्रथा स्त्रियों द्वारा वीणा व कंठ से करना, ऋतु अनुसार सामों का वर्णन तथा ताल देने वाले का वर्णन इस बात का संकेत करता है कि यर्जुवेद कर्मकान्ड प्रधान अवश्य था परन्तु इस काल में भी संगीत को यथा स्थान मान्यता प्राप्त थी।

वैदिक वाङ्मय में ताल वाद्यों का विशद वर्णन मिलता है किन्तु ताल का वर्णन नहीं है। मात्रा गिनती करने वाले 'गणक' नामक कलाकार का नाम मिलता है। 'स्वर शुद्धि' साम गान का मूल आधार था।[3] सामवेद संगीत मय है ऋग्वेद की गेय ऋचाओं का संकलन इस वेद की मुख्य विशेषता है। ऋचाओं के गान से उस काल में संगीत कला की उन्नति हुई। भारतीय संगीत के इतिहास में संगीत के महत्व पर प्रकाश डालने वाला सामवेद प्रथम ग्रन्थ है।

संगीत आदि कलायें संस्कृति का महत्वपूर्ण अंग है। भारतीय संगीत ही उस सागर के समान है जिसके चारों ओर की नदियां मिलती है परन्तु फिर भी वह अपनी मर्यादा नहीं छोड़ता, अपनी स्वाभाविक स्थिति, स्वाभाविक सौन्दर्य को नहीं छोड़ता। संगीत ने अपनी मौलिक मर्यादा को सदा बनाये रखा जबकि अनेक परिवर्तन आये। भारतीय संगीत पर अपने रंग चढ़ाये गये जैसे विदेशियों का आक्रमण, विदेशियों के प्रभाव आदि। इस प्रकार संगीत अनेक रंग परिस्थितियों से गुजरता रहा परन्तु फिर भी भारतीय संगीत ने अपनी भारतीय संगीत ने अपनी भारतीय के सौन्दर्य को नहीं छोड़ा।

रामायण और महाभारत हमारे महान वीर काव्य है। यद्यपि यह ग्रन्थ संगीत शास्त्र के अन्तर्गत नहीं आते, फिर भी उनमें उपलब्ध लय तथ्यों के आधार पर भारतीय संगीत के कुछ ऐतिहासिक उपादानों का संग्रह किया जा सकता है। इन ग्रन्थों के प्रत्येक सर्ग या अध्याय में नृत्य–गीत–वाद्य एवं संगीत का उल्लेख है।[4]

रामायण में गार्न्धव गान के प्रसंग में कई स्थानों में पाणिवादकः, पाणिध्वनिकाः, पाणिस्वनिनः आदि शब्दों के उल्लेख है जिससे ऐसा प्रतीत होता है कि लय साम्य हेतु हाथ से ताली देने की प्रथा उस समय प्रचलित थी महाभारत के अनुशासन पर्व 25/19 में प्रदत्त ताल देने की रीत उल्लेखनीय है।

> ''पाणितालसतालश्च शम्यातालैही समयस्तथा।
>
> संप्रहृष्ट्रैहि प्रनृत्यादि्भः सर्वस्तत्रनिर्षध्यते''।।

भरत ने नाट्यशास्त्र 31/29 में निशद्ध एवं सशद्ध तालों का उल्लेख किया है। शम्या या ताल क्रिया का उल्लेख भी नाट्यशास्त्र 39/38 में है।

अश्वतर व कबंल के उल्लेख प्राचीन पुराणों में गार्न्धव शास्त्र विशारदों के रूप में है। महाभारत, संगीत रत्नाकार आदि ग्रन्थों में भी इनके नामों का उल्लेख है। यह स्वाभाविक है कि पुराणों में ताल का विस्तृत विवेचन नहीं किया गया किन्तु लय, यति व ताल के अन्य प्रमाणित तथ्यों के उल्लेख विद्यमान है। मार्कन्डेय पुराण के 23 के अध्याय में संगीत की अधिष्ठात्री देवी सरस्वती के माध्यम से आवाम, निष्काम विक्षेप, प्रवेशक आदि ताल क्रियाओं का विवेचन की नहीं किया गया, वाद्य वर्गीकरण का भी विस्तृत प्रमाण मिलते हैं।

हमारे देश की संस्कृति धरोहर में प्रागैतिहासिक युग से वर्तमान तक संगीत के अतिरिक्त अन्य साहित्य व शास्त्रों में भी ताल तत्वों का वर्णन प्राप्त होता रहा है। प्राचीन संगीत शास्त्र ग्रन्थों में उपलब्ध सूचनाओं के आधार पर

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 01, June 2021
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021
UGC CARE listed Journal

तत्कालीन तालों के स्वरूप का विवेचन किया गया है। वर्तमान समय में अनेक प्राचीन पान्डूलिपियां उपलब्ध नहीं है एवं उपलब्ध पाडूलिपियों में श्रिंखलायें व्याप्त है। अतः जब तक इन पान्डूलिपियों का शोधपूर्ण रीति से सम्पादन कार्य पूरा नहीं होता तब तक प्राचीन तालात्मक तथ्यों को ऐतिहासिक दृष्टि से पूर्ण नहीं माना जा सकता है।

केवल संस्कृत ही नहीं अन्य भारतीय भाषाओं में भी प्राचीन ताल शास्त्र पर लिखे हुये ग्रन्थ उपलब्ध है– ताल लक्षण, ताल विषय, ताल विद्यानम, ताल समुन्द्र, ताल दीपिका, ताल–महोदधि, ताल लक्षण संग्रह आदि अनेक प्राचीन ग्रन्थ केवल ताल पर ही लिखे गये। एक संगीत पर लिखे गये प्रायः सभी शास्त्र ग्रन्थों में भी ताल व लय वाद्यों का विस्तृत विवेचन उपलब्ध है।[5]

प्राचीन ताल ग्रन्थों में उत्तर व दक्षिण के मतभेद नहीं है दक्षिण भारतीय संगीत में शैलियों की विभिन्नता के साथ–साथ मौलिक परिवर्तन हुए। प्राचीन ताल व उनके बोलों पर गहन अध्ययन कर वर्तमान ताल शास्त्र से उनका सांगोपांग समन्वय करना आगे निश्चय ही सम्भव होगा एवं आज के समान ही तत्कालीन तालों एवं पाठ्यवर्णो की अनेक रूपता को उपेक्षा या उपहास की दृष्टि से देखने का दुस्साहस कोई न कर सकेगा।[6]

ताल द्वारा संगीत में रचनात्मकता

रचनात्मकता शब्द का तात्पर्य है, '' किसी नई वस्तु की खोज या निर्माण करना''।

रचनात्मकता में पुस्तकीय ज्ञान या अर्जित कौशलों के संचय का महत्व नहीं है। रचनात्मकता में व्यक्ति पहले से उपलब्ध ज्ञान में कुछ नया जोड़ता है।

बर्नाई (ठमतदंतक) ने रचनात्मक की परिभाषा देते हुये कहा हैः– "Creativity involves a search for new meanings and solutions that combine, imminent and synthesize. It is restructuring of the perceptual field as the result of sensing some kind of deficiency." [7]

संगीत शिक्षण का मुख्य लक्ष्य छात्र के गुणों को ज्ञात कर उसके आधार पर शिक्षा प्रदान करना तथा उनमें रचनात्मक संगीत की योग्यता का विकास करना है।

तालों में विभिन्नता ही गायन, वादन एवं नृत्य में रचनात्मकता व नवीनता का संचार करती है। लय तथा तालों का विभाग संगीत में रस का संचार करने के लिये एक महत्वपूर्ण तत्व है। ताल युक्त संगीत एवं विभिन्न सौन्दर्यपूर्ण शैलियों द्वारा प्रस्तुतिकरण रचनात्मक एवं रोचकता उत्पन्न कर देता है। ताल द्वारा कलाकार की कला मौलिक तत्वों से सम्बन्धित होकर अत्यधिक समृद्ध हो जाती है। ताल व्यवस्था सांगीतिक काल नियमितता का सूचक होती है। इस नियम द्वारा ही संगीत में रचनात्मक एवं सौन्दर्य की वृद्धि होती है।

''वीणावादन तत्वज्ञाः श्रुति जाति विशारदः।

तालज्ञश्चाप्रयासेन मोक्षमार्ग निगच्छति।।''

ताल की रचनात्मकता के आधार पर ही एक वादक उत्तम और दूसरा अद्यम घोषित किया जाता है।

''संग्रामेपु भटेन्द्राणां कवीनां काविमण्डले।

दीप्तिर्वा दीप्तिहानिर्वा मुहुर्तेनैव जायते।[8]

भारतीय संगीत में समय के नापने की क्रिया को ताल कहा जाता है। लय और मात्रा क्रिया के माध्यम है तथा लयकारी ताल क्रिया का श्रृंगार है। प्राचीन काल से ही ताल प्रणाली अपनी रचनात्मकता के साथ समृद्ध रही है। लय की नैसर्गिक गतियों के फलस्वरूप ताल का विस्तार हुआ। तत्पश्चात विकास क्रम के आधार पर शास्त्र निर्मित हुआ और ताल में नित–नूतन प्रयोग होते रहें। इसी कारण भारतीय संगीत में क्लिट कठिन एवं सरल तालों का निर्माण हुआ और तालों को संगीत के साथ भिन्न–भिन्न रूपों में जोड़ा गया। ताल संगीत की संजीवनी शक्ति है। ताल रहित संगीत में कोई सौन्दर्य तथा सार्थकता नही रह जाती।

गायन–वादन की क्रिया के साथ विविध तालों एवं लय के विभिन्न वैचित्रयों का प्रयोग होता है जो प्रस्तुतीकरण में सौन्दर्य व रचनात्मकता उत्पन्न करता है। 16 मात्रा एवं 12 मात्रा की ताल का वज़न अलग–अलग होता है। ताल के वज़न के अनुसार ही बंदिश की रचना होती है एवं गायकी का रूप बनता है। बंदिश में मुखड़ा, पकड़ कर सम पर आना कभी लय के साथ कभी लय को काट कर गाना रचनात्मकता व सौन्दर्य उत्पन्न करता है। ताल के कई आवर्तन तक सेवा श्वास रोकना व फिर सम पर आना तनाव के बाद विज्ञप्ति प्रदान करता है। विलम्बित लय की आलापचारी में जहां गम्भीरता व ठहराव होता है, वहीं तानों की द्रुत लय में रचनात्मकता एवं कलात्मकता होती है गायन, वादन, नृत्य में भिन्न–भिन्न लयों का प्रदर्शन सौन्दर्य एवं रचनात्मक की पराकाष्ठा है। ताल संगीत में संजीवनी शक्ति का कार्य करती है। संगीत में गायन, वादन एवं नृत्य तीनों में ही ताल का अति महत्वपूर्ण स्थान है। ताल व लय के चमत्कारिक प्रयोगों द्वारा ही संगीत में माधुरी लेकर उत्पन्न हो जाता है। ताल का उद्देश्य लय को कायम रखना है। ताल का ज्ञाता व्यक्ति स्वर–रूपी किनारा सम पर आ जायेगा। संगीत की प्रस्तुति को और अधिक प्रभावशाली एवं चमत्कृत बनाने में लय ताल का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। संगीत में जहां संगीतज्ञ विभिन्न लयकारियों के माध्यम से संगीत में रचनात्मक चमत्कार उत्पन्न करता है, वहीं विभिन्न लयों के माध्यम से विभिन्न भावों की सौन्दर्यात्मक अभिव्यक्ति प्रगाढ़ होती है। इसी प्रकार भिन्न–भिन्न छन्द सम, ताली खाली का प्रदर्शन, विभिन्न लयों द्वारा रसानुभूति, भिन्न–भिन्न शैलियों में तालों का सौन्दर्य, ताल के बोलों, भिन्न–भिन्न मात्राओं, उनके खण्डों के वज़नों तथा विभिन्न लयों एवं शैलियों द्वारा संगीत में रचनात्मकता उत्पन्न की जाती है।

तबला सोलों वादन में वादक अपनी वादन शैली में नई–नई रचना द्वारा वादन शैली को नित ऊंचे शिखर पर पहुंच रहा है। पंजाब घराने के विश्व विख्यात तबला वादक जाकिर हुसैन नित्य नये रचनात्मक प्रयोगों द्वारा जैसे (तबले पर राधा–कृष्ण का संवाद, घोड़ो की पदचाप आदि प्रयोग तबला वादन को नये शिखर प्रदान कर रहा है।

छन्द परन, स्तुति परन, ताडंव आदि वादन में रचनात्मक का ही प्रमाण है जो सोलों वादन में नवीनता और सौन्दर्यात्मकता उत्पन्न करता है।

सौन्दर्य पूर्ण शैलियों के अन्तर्गत ख्याल गायन की संगीत में विलम्बित ठेकों में रचनात्मक उत्पन्न करने में जिनका नाम विशेष रूप से लिया जाता है उनमें उस्ताद निजामुद्दीन खॉं उल्लेखनीय है। तालों को रचनात्मक

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 01, June 2021
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021
UGC CARE listed Journal

ढंग से प्रस्तुत करने में बनारस घराने के तबला वादक अनोखे लाल मिश्र जी का नाम उल्लेखनीय है, जिन्हें अति द्रुत लय में तीन ताल वादन करने में प्रसिद्धि प्राप्त हुई।

संगीत प्रवीणता कोई एक मार्गी प्रवीणता नहीं है बल्कि सांगीतिक गुणों का पुंज है जिससे पदानुकुम पाया जाता है। इनमें से प्रत्येक गुण एक–दूसरे से स्वतन्त्र व भिन्न होते हैं। ये प्रवीणतायें भी समूह रूप से पाई जाती है। जैसे–ध्वन्यात्मक समूह, लयात्मक समूह, गत्यात्मक समूह, बौद्धिक समूह आदि। संगीत शिक्षण में रचनात्मक की खोज व उसका संगीत विधाओं में प्रयोग वर्तमान संगीत शिक्षण के क्षेत्र में विदेशी संगीत शिक्षकों द्वारा उठाया गया एक क्रान्तिकारी कदम है।

निष्कर्ष

संगीत में ताल एवं लय के अनुसार चलने वाली नियमित गतियों का आत्मा से निकट का सम्बन्ध है। शुद्ध संगीत की शास्त्रीयता में, मिश्रित संगीत की लोकप्रियता में भी यह आन्तरिक अनुशासन, संरचनात्मकता समस्वरता की समन्वित स्थिति में सहज है। समस्वरता स्थायी लब्धि है और ताल, मात्रा, लय, सुर तथा तान के विन्यास से संरचना में प्रारूप प्रकार का वैविध्य रचनात्मक एवं गतिशील रहता है। गायन–वादन की क्रिया के साथ विविध तालों एवं लय के विभिन्न वैचित्रयों का प्रयोग होता है जो प्रस्तुतीकरण में सौन्दर्य व रचनात्मकता उत्पन्न करता है।

ताल संगीत की संजीवनी शक्ति है। ताल रहित संगीत में कोई सौन्दर्य तथा सार्थकता नही रह जाती इसलिए ताल को संगीत का प्राण कहा जाता है।

संदर्भ

1. सेन, अरुण. कुमार.. भारतीय तालों का शास्त्रीय विवेचन. मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी भोपाल, पृ. 46
2. सेन, अरुण. कुमार. भारतीय तालों का शास्त्रीय विवेचन. मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी भोपाल, पृ. 50
3. लेखक का नाम. भारत की संस्कृति परम्परा. बर्द्ववान म्यूजिक अकादमी बर्द्ववान (बेस्ट बंगाल), पृ. 13
4. सेन, अरुण. कुमार. भारतीय तालों का शास्त्रीय विवेचन. मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी भोपाल, पृ. 18
5. सेन, अरुण. कुमार. भारतीय तालों का शास्त्रीय विवेचन. मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी भोपाल, पृ. 248
6. सेन, अरुण. कुमार. भारतीय तालों का शास्त्रीय विवेचन. मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी भोपाल, पृ. 249
7. शाल, शोभना. संगीत शिक्षा प्रणाली. विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, पृ. 264
8. सेन, अरुण. कुमार. भारतीय तालों का शास्त्रीय विवेचन. मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी भोपाल, पृ. 54